एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 04 (जुलाई-अगस्त, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

गाय-भैंसों में पूंछ संबंधी बीमारियां एवं उपचार

(*अमित कुमार[1], नवीन कुमार[1] एवं आकाश[2])
[1]लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविध्यालय, हिसार, हरियाणा
[2]चौधरी चरण सिंह कृषि विश्वविधालय, हिसार, हरियाणा
संवादी लेखक का ईमेल पता: amitdhartterwal@gmail.com

गाय-भैंसों में पूंछ संबंधी बीमारियां होना आम हो गया है। पशु अपनी पूंछ की मदद से मक्खी मच्छर को अपने शरीर से दूर करते हैं। अनेक भैंसों में पूंछ की लंबाई एवं इसके नीचे वाले भाग के बालों का रंग इस की नस्ल का बोध कराते हैं। पूंछ अनेक प्रकार की चोटों एवं बीमारियों के लिए संवेदनशील है इसलिए किसानों को चाहिए कि वह समय पर इनकी बीमारियों पर ध्यान दें व समय रहते इनका उपचार करवाएं ताकि उनकी सुंदरता एवं कीमत बनी रहे।

पूंछ संबंधित बीमारियां एवं घाव–

1. लैदरी / पूंछ का सूखना/ देगनाला रोग /टेल गैंग्रीन

मुख्य कारण– यह रोग एक मुख्य प्रकार की फंगस aspergillus/fusarium के कारण होता है जो कि आमतौर पर धान की पराली में पाया जाता है। इस रोग में पूंछ का नीचे वाला हिस्सा सूखने लगता है।

उपचार–

- पशु का खाने वाला तूड़ा एवं पराली नमी रहित व फंगस रहित होना चाहिए।
- 20 परसेंट नाइट्रोग्लिसरीन क्रीम के लगाने से भी गैंग्रीन से ग्रसित पूंछ में लाभदायक परिणाम मिलते हैं।
- शुरुआती दिनों में रोग ग्रसित पूंछ को दवाइयों से भी ठीक किया जा सकता है। पूंछ को रगड़ के धोना चाहिए और उसमें बाद तारपीन एवं सरसों के तेल से मालिश करना काफी लाभदायक सिद्ध होता है।
- होम्योपैथिक दवाई tailguard की 20 बूंदे रोटी पर प्रतिदिन खिलाने से भी काफी राहत मिलती है।
- 40–50 ग्राम पेंटासल्फेट मिश्रण ($FeSO_4$ + $CuSO_4$ + $ZnSO_4$ + $CoSO_4$ + $MgSO_4$) लगातार 10 से 13 दिन तक गुड़/आटे के साथ पशु को खिलाना चाहिए।
- अगर दवाइयों से कोई लाभकारी परिणाम नहीं मिलता हैं तो पूंछ का रोग ग्रस्त हिस्सा सर्जन द्वारा कटवा देना चाहिए

2. पूछ में चोट लगना

कारण–

- पेड़ के घुमावदार तने में पूंछ के फंसने से आमतौर पर पूंछ टूट जाती है।
- कांटेदार झाड़ियों एवं बाड़ के तार में पूंछ के फंसने से चोट लग जाती है
- पशुओं के एक दूसरे के सींगो में पूंछ का फसना, दूसरे पशु का पैर रख देना इत्यादि

उपचार–

- पशुओं का रखने का स्थान खुला होना चाहिए ताकि पशु एक दूसरे को नुकसान नहीं पहुंचा सकें।
- चोट लगते ही पूंछ को डिटॉल वाले पानी से धोना चाहिए तथा जिस जगह पर चोट लगी हो उस जगह के आसपास के बालों को काट देना चाहिए
- अगर चोट गहरी है तो सबसे पहले कोशिश खून रोकने की होनी चाहिए। इसके लिए पपूंछ की जड़ में पट्टी बांध देनी चाहिए
- प्रतिदिन घाव की साफ सफाई करनी चाहिए ताकि इंफेक्शन ना फैले। घाव की सफाई लिक्विड बीटाडीन से करनी चाहिए उसके बाद नियोस्पोरिन पाउडर लगवा कर पट्टी करनी चाहिए
- अगर ज्यादा दिनों तक घाव ठीक ना हो अथवा घाव के नीचे वाला हिस्सा अगर ठंडा पड़ जाए तो उसे सर्जन द्वारा कटवा देना चाहिए